The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पंजाब में बौद्ध स्थापत्य कला और पुरातात्विक स्थलों का अध्ययन

अंश कुमार

शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

ई. मेल. ansh2592@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

स्थापत्य कला, मूर्तिकला, वस्तुकला, वेदिका स्तंभ, बौद्ध स्तूप, धर्म चक्र स्तूप, संघराम, गंधार कला, मथुरा कला, शालभंजिकायें, यक्षणी

ABSTRACT

प्राचीन पंजाब के धार्मिक इतिहास में बौद्ध स्थापत्य कला का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। बौद्ध स्थापत्य कला का विकास भारतीय भूमि पर हुआ है। मौर्य शासक अशोक के शासन काल में एक नवीन निर्माण शैली का विकास हुआ जिसने बौद्ध वस्तुकला को प्रोत्साहित किया इसके अंतर्गत धम्म अभिलेख, स्तभ और बौद्ध स्तूप व विहार चैत्य आदि को प्रोत्साहन मिला। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक को 84000 स्तूपों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है तथा वहीं कुषाण कालिन शासक कनिष्क काल में भारतीय वस्तुकला की नवीन निर्माण शैली का विकास हुआ अनेकों बौद्ध स्तूपों व विहारों को बौद्ध वस्तुकला व मूर्ति कला से शशुसोभित किया जाने लगा स्तूपो में प्रतिमाएँ स्थापित की जाने लगी। उसी का परिणाम है कि बौद्ध धर्म अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा इसमे महत्त्वपूर्ण भूमिका बौद्ध स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला की भी रही है। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में मूर्तिकला व स्थापत्य कला आदि की भूमिका सराहनीय रही है। बुद्ध तथा उनके धर्म को समझने के लिए बौद्ध स्थापत्य कला व मूर्तिकला को समझना अति आवश्यक है क्योंकि बुद्ध से सम्बन्धित स्थलों व प्रतीकों को कला के माध्यम से वस्तुकला में स्थापित किया गया है पंजाब के विभिन्न स्थलों से इसके निशान मिलते हैं। बौद्ध कला की दृष्टि से संघोल एक महत्त्वपूर्ण स्थल है। किन्तु भारत के पश्चिमी सीमा क्षेत्र से पंजाब में निरंतर विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप पंजाब के बौद्ध स्मारकों की सबसे अधिक क्षति हुई है। जिनके अवशेष पंजाब के अनेक हिस्सों से प्राप्त होते हैं। जो बौद्ध विरासत की महत्त्पूर्ण देन है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15663476

प्रस्तावना:

प्राचीन भारतीय धार्मिक परम्परा में बौद्ध धर्म एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह भारत ही नहीं भारत में समय-समय पर अन्य देश से आये विदेशियों के लिए भी अपने दरवाजे खोल दिये। जिससे देश व विदेश के सभी वर्ग के लोग सत्य और अहिंसा का लाभ उठा सके चार आर्य सत्य. आर्य अष्टागिक मार्ग बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धान्त है। बौद्ध धर्म का उद्भव छठी शताब्दी ईपू की एक महत्वपूर्ण घटना है। वर्तमान समय में ऐशिया देशो की अधिकाश जनसख्या बौद्ध धर्म को मानने वाली है। जिनका प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म है पजाब में बौद्ध धर्म का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। युद्ध के काल में ही वृहद मजाब के निवासी बलख (पेशावर गधार) के निवासी 'तपस्सु और 'भल्लिक' नामक दो व्यापारी व्यापार करके उत्तरापंथ मार्ग के माध्यम से उड़ीसा से बौद्ध गया पहुँचे भगवान बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्ति किये हुए केवल सात सप्ताह ही बीते थे कि इनकी मुलाकात बुद्ध से बौद्ध गया में हुई। व्यापारियों ने बुद्ध को खाने के लिए प्रथम आहार 'मधुपिण्ड' का भोजन दिया। दोनों ने बुद्ध की शरण ग्रहण की वह उनके पहले ग्रहस्थ-श्रावक बने। इन्होंने केवल दो ही ग्रहण किये थे। इलिए इन्हें द्विवायिक शिष्ट कहा गया है।[i]

इसी दौरान कश्मीरी मूल का पतली ऊँची नाक वाला गांधार निवासी 'कप्फिन' नामक एक माणवक इसी मार्ग से राजगृह पहुँचा। राजगृह के वेणुवन में उसने भगवान बुद्ध के उपदेश सुने, वह वही प्रवजित होकर बौद्ध भिक्खुसंघ में शामिल हो गया और वृहद-पंजाब' का वह प्रथम बौद्ध भिक्षु हुआ।[ii] एक मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध ने प्राचीन पंजाब के कुरुरठ का भ्रमण किया कुरु के कमासदम्म में चारीका करते हुए बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया था। दीघनिकाय, अंगुतर निकाय आदि ग्रंथों में बुद्धकालीन 16 महाजनपद का वर्णन किया गया है जिनमें बृहद पंजाब के तत्कालीन महाजनपदों में तक्षशिला महाजनपद[iii], कम्बोज और कुरुमहाजनपद की गणना बृहद पंजाब में की जाती है जो उस काल में बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र थे। करु महा जनपद के 'कम्मास धम'[iv] में बुद्ध ने सतीपप्ठान सूत का प्रवचन दिया था। इस तरह पंजाब में बौद्ध धर्म का सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन है। पजाब में बौद्ध धर्म का इतिहास लगभग दो हजार साल पुराना है। आधुनिक भारत में हुए उत्खननों से पता चलता है कि प्राचीन समय में पंजाब का प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म ही था जिसके पुरातात्विक व साहित्यिक साक्ष्य भी उपलब्ध होते है। संघोल नामक बौद्ध स्थल 1985 की खोज से बौद्ध धर्म के अतीत व अस्तीत्व का पता चलता है। इस पुरातात्विक स्थल ने बौद्ध जिज्ञासुओं का ध्यान आकृषित किया है। जो पंजाब में बौद्ध धर्म के संदर्भ ने प्रश्न चिह्न लगता है? क्या वर्तमान समय में पंजाब में बौद्ध धर्म का अस्तित्व है? या पंजाब से बौद्ध धर्म का ह्रांस कैसे हुआ? आदि प्रश्नों का उत्तर दिया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। क्योंकि वर्तमान पंजाब की अधिकांश जनसंख्या सिख धर्म से सम्बन्धित है।

इस शोध पत्र में विभिन्न पुस्तकों या दस्तावेजों और पुरातात्विक स्थलों और शोध लेखों आदि का विश्लेषण करके पंजाब में बौद्ध धर्म प्राचीन और वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीन पंजाब का धार्मिक इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। क्योंकि भारतीय सभ्यता व संस्कृति की जननी पंजबा ही है। अगर वही तथागत भगवान बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाले तो पता चलता है कि लुम्बिनी वन वर्तमान समय के रुम्मनदेई नेपाल से शुरू होकर मगध सम्राज्य से होते हुए आज के उत्तर प्रदेश कुसी नगर में विराम देता है। लेकिन भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ सरहदों की बंदीशों को तोड कर अनेक देशों को आज भी सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ा रही है। इसके पीछे मौर्य शासक अशोक के साथ-साथ पंजाब की धरती यहाँ की आवोहवा एवं

तत्कालीन शासकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है जिसके पुरातात्विक व साहित्यिक साक्ष्य भी इसी तरफ इशारा करते हैं। भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में मौर्य सम्राट अशोक ने नई निर्माण शैली का विकास किया। जिनमें धम अभिलेख, स्तंभ, बौद्ध विहार, बौद्ध चेत्य व स्तूप महास्तूप आदि निर्माण की परम्परा को प्रोत्साहित किया। बौद्ध साहित्यों के अनुसार अशोक ने अपने शासन काल में 84000 बौद्ध स्तूपों का निर्माण कराया[v] जिनके भग्नवशेष पंजाब के विभिन्न हिस्सों से मिलते हैं। इनमें प्रमुख प्राचीन बौद्ध नगर संघोल व जालंधर, तोपरा शामिल हैं।

संघोल के बौद्ध स्थापत्य कला और पुरातात्विक स्थल-

पंजाब में बौद्ध धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज संघोल बौद्ध स्थल की खुदाई है। संघोल एक ऐतिहासिक स्थल है जो पंजाब के फतेगढ़ साहिब जिले में स्थित है जिसे आधुनिक समय में ऊँचा पिण्ड' संघोल के नाम से जाना जाता है। यह स्थल चण्डीगढ़, लुधियाना राज्य मार्ग पर स्थित है। चण्डीगढ़ से इसकी दूरी मात्र 40 किलोमीटर पश्चिम दिशा की ओर स्थित है।[vi] इस स्थल का इतिहास उत्तर हड़प्पा सभ्यता से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के जहाँगीर काल तक जाना जाता है।[vii] इस स्थल का सर्वप्रथम साहित्यिक उल्लेख "कौटिल्य के अर्थशास्त्र में में तीन खाईयों में किले बंदी द्वारा किया गया है।"[viii] प्राचीन भारत में बड़े नगरों के चारों ओर परिखा तथा रक्षा प्राचीन प्रकार बनाने की परम्परा थी। अर्थशास्त्र के साथ-साथ मेगान्थनीज के विवरणों से इसकी पुष्टि होती है। बौद्ध जातकों में 'त्रिर्गत'[ix] राज्य का वर्णन आया है। जिसकी पहचान जालंधर तथा संघोल से की जाती है। सातवीं शताब्दी में भारत आए चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरणों में शी-तो-तू-लू[x] नाम का उल्लेख मिलता है, जिसकी पहचान संघोल से की जाती है। संघोल से बौद्ध धर्म से संबंधित जिनमें बौद्ध महा विहार, धर्म चक्र स्तूप, स्तम्भ, सिक्के, मोहरें, वास्तुकला, बौद्ध भिक्षु के अस्थित अवशेष आदि संबंधित साक्ष्य प्राप्त हुए है। सर्वप्रथम इस स्थल का उत्खनन "20 दिसम्बर 1968 ई. में आर.के. विष्ट द्वारा किया गया।"[xi] और 1985-1990 के दशक के दौरान डॉ. सी. मार्गबन्धु के नेतृत्व में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा पंजाब के पुरातात्विक विभाग के द्वारा उत्खनन कार्य किया गया। उत्खनन के विभिन्न चरणों में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित बौद्ध स्तूप के भग्नावशेष प्राप्त हुए जिनका कुषाण काल में पुनः निर्माण करवाया गया था। स्तूप के अंदर से मथुरा तथा गांधार कला से संबंधित कुषाण कालीन 117 वेदिकाओं की शिल्प कृतियाँ मिली है। जिनमें 69 वेदिका स्तंभ (रलिंग पिलर), 35 सूची पट (क्रास वार), 13 मृद मूर्तियाँ प्राप्त हुई।[xii] आगरा, मथुरा, फतेहपुर सीकरी के निकटवर्ती इलाकों में पाये जने वाले लाला बलूये पत्थर से निर्मित यह वस्तुखण्ड या मूर्तिया प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी ई. की कुषाण कालीन मूर्ति शिल्प की परिचायक है जो मथुरा कला केन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है। किन्तु साथ में ही गांधार कला केन्द्र का प्रभाव इन में साफ दिखाई देता है। इन पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि संघोल प्राचीन भारतीय बौद्ध स्थापत्य कला और सभ्यता व संस्कृति को संजोये हुए हैं। यहाँ से मौर्य, शुग, कुषाण, गुप्त, मिहिरकल, हूण, इंडयो ग्रिक आदि शासकों से संबंधित वस्तुएँ प्राप्त हुई है। जिससे यह कहा जा सकता है कि यह स्थल संघोल छः कालखण्ड युगों का गवाह रहा है।

संघोल का पुरातात्विक महत्त्व-

संघोल अपने पुरातात्विक अवशेषों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। 1933 ई. में ही इस बौद्ध स्थल की पहचान हो चुकी थी।"[xiii] लेकिन इसका वास्तविक उत्खनन 1968 ई. में पंजाब पुरातात्विक विभाग के तत्कालीन निर्देशक आर.के. विष्ट द्वारा किया उत्खनन के लिए 14 टिलों की पहचान की गई जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण टीला SGL-5, SGL-11 तथा हाथीवाड़ा पुरास्थल है। SGL-5 टीले के उत्खनन में एक विशाल वृत्ताकार बौद्ध स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए है। इस स्तूप के निर्माण में पक्की ईट की दीवारों से चिनाई करवाई गई और अंतवर्ती भाग को मिट्टी और कंकड़ो से भर दिया गया था। स्तूप के प्रक्षिणा-पथ तक जाने के लिए चूने-प्लास्टर का एक चबूतरा बनाया गया और पहुँच मार्ग के लिए चारों ओर से सोपान-श्रृंखला बनाई गई थी। स्तूप देखने में धर्म चक्र की तरह दिखता है इस चक्र के अंदर तीन गोले है, जिसमें पहला छोटा, दूसरा उससे बड़ा तथा तीसरा सबसे बड़ा बना है। उसमे समान अनतराल की दूरी पर तीलियों के समान ईट की पक्की चिनाई की गई है। स्तूप के अंदर से एक बौद्ध भिक्षु के अस्थि अवशेष प्राप्ति हुई है। ऐसा माना जाता है कि इसमें बुद्ध की अस्थियाँ रखी गई थी"[xiv] साथ ही कुछ ही दूरी पर एक अस्थि अवशेष का ढकन प्राप्त हुआ है जिसमें खरोष्टी लिपि में एक लेख उत्कीर्ण है जिस पर 'अभेनद' लिखा हुआ है।"[xv] इसी स्तूप के उत्तर पूर्व दिशा में एक संघराम के अवशेष भी प्राप्त हुए है। तथा धर्मचक्र सतूप के आस-पास बहुसंख्यक संख्या में मन्नत वाले छोटे स्तूप प्राप्त हुए है। जो इस बात के साक्षी है कि संघोल कुषाण काल में साची, बौद्ध गया, अमरावती, सारनाथ के स्तूपों के समान ख्याती प्राप्त थी SGL-11 के उत्खनन में एक 39 मीटर लम्बा और 36 मीटर चौड़ा संघराम भी प्राप्त हुआ है। इसके केन्द्र में एक बौद्ध स्तूप भी प्राप्त हुआ है। जो एक वर्गाकार चबूतरे पर बनाया गया प्रतीत होता है। इस स्तूप के उत्खनन से 'किले बंदी के प्रमाण मिलते हैं हाथीवाड़ा पुरास्थल के उत्खनन में आवासी गृह है और इस किले के तीनों तरफ खाई के प्रमाण भी मिलते है जिससे यह प्रतीत होता है कि इस नगर की बाहरी आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखने के लिए किलेबंदी के द्वारा घेरा गया था।

संघोल- संघोल भौगोलिक रूप से प्राचीन व्यापारिक मार्ग उत्तरापंथ पर स्थित है यह मार्ग इन्द्रप्रस्थ रोहितिक और संघोल से होकर तक्षशिला और मथुरा संघोल, सुनेट फिल्लेर, जालंधर होकर गुजरता था. इन स्थलों की इस व्यापारिक मार्ग पर होने के कारण कला, स्थापत्य कला एवं धार्मिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान था। यह मार्ग व्यापार तथा यातायात के साथ-साथ कुषाण काल में धर्म व बौद्ध कला का प्रमुख मार्ग था जिस पर व्यापारिक कर्वा चलता था।

संघोल की वस्तुकला - संघोल की वस्तुकला की दृष्टि से विशेष महत्व

रहा है। फरवरी 1985 ई. के पुरातात्विक उत्खनन के दौरान यहाँ से मूर्तियों का एक बड़ा खजाना प्राप्त हुआ। यह वस्तुकला स्तूप की वेदिका है जिन पर यक्ष, शालभंजिकाएं, यक्षिणी तथा नारी रूपी का सुन्दर अलंकार उत्कीर्ण किया गया है। इनमें 69 वैदिक स्तम्भ 35 सूचीपट्ट है जो मथुरा शिल्प कला के समान लाल बलुये पत्थर पर उत्कीर्ण है। इसकी पहचान प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी ई. के कुषाण काल के मथुरा शिल्प का प्रतिनिधित्व करती है। साथ ही गांधार शिल्प कला का भी प्रभाव इन पर स्पष्ट परिलक्षित होता है संघोल से प्राप्त मूर्तियाँ नारी प्रधान मूर्तियाँ जिनमें शारीरिक सुडोलता स्तनी की स्थूलता विविध क्रीड़ा प्रियता और अंग भंगिकाओं की मोहकता दर्शनीय है। स्तूप के चारों ओर भूतल और प्रथमतल पर प्रदक्षिणा पथों का

निर्माण रेलिंग (वेदिका) द्वारा बनाया जाता था। ऐसे सज्जित 'प्रदक्षिणा पथ साची के स्तूपों में आज भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

कुषाण काल में मथुरा तथा उसके आस-पास पंजाब के अनेक नगरों में ऐसे ही स्तूपो का निर्माण किया गया था। शिल्पकारों ने इन वेदिका-स्तंभों के अलकरण में कुषाण कला का भरपुर उपयोग किया गया है। स्त्री पुरुषों की विभिन्न मुद्राओं और उनके लुभावने हाव-भावो से इन वेदिका स्तंभों को अलंकृत किया गया है। संघोल के उत्खनन में मिली वेदिकाओं में शिल्पकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। इसका परिणाम यह था कि वेदिका स्तंभ का ऐसा कोई भी भाग शेष नहीं बचा जिसमें शिल्पकारों ने अपनी कला का चमत्कार नहीं दिखाया हो। इनमें यक्षणी, शालभंजिकाएँ, बच्चों को गोद में लिए माताएँ, उपासक, उपासिकाएँ, दर्पण-देखती रूपा-नाभिकाएँ, बर्तकिया, स्नान सुंदरिया प्रसाधिकाएँ आदि प्रमुख पात्र हैं। वेदिकाओं में निर्मित महिलाओं के अंगों का समुचित अनुपात उनकी त्रिमंग मुद्राएँ मोहक मुस्कान लज्जित और रसीले नयन, आकर्षित केश-सज्जा, गोलाकार वक्ष स्थल। संघोल के उत्खनन में प्राप्त यह कलाकृतियाँ कुषाण कालीन मथुरा कला की विश्व धरोहर है। कुषाण शासक कला प्रेमी थे उन्होंने बौद्ध धर्म कला के लिए एक नई शैली का विकास किया। इस कला शैली के दो प्रमुख केन्द्र थे। एक गांधार कला जो रोमन यूनानी भारतीय कला का मिश्रण है तथा दूसरा मथुरा कला जिस पर भारतीय प्रभाव परिलछित होता है। गांधार कला की प्रतिमाओं में काले व सलेटी व कठोर पत्थरों का प्रयोग किया गया है। वहीं मथुरा कला की आकर्षक प्रतिमाओं में आगरा के आस-पास पाए जाने वाले पत्थरों का प्रयोग किया गया है। कुषाण काल में मथुरा तथा संघोल बौद्ध धर्म के प्रमुख नगर थे। मथुरा के कलाली टिला, कटरा, भुतेश्वर, जमालपुर, बलवभद्र, शोक, कुण्ड आदि नगर प्राचीन बौद्ध धर्म स्थलों के उत्खनन में अनेकों बौद्ध धर्म से संबधित शिल्पकृतियाँ प्राप्त हो चुकी है। इनमें पंजाब के संघोल से प्राप्त 117 कला अवशेष अनेकों शालभंजिकाएँ, यक्षणियाँ, वर्पण वर्शनी, दूग्ध धारणी, बच्चों को गोद लिये माताएँ, नर्तकियाँ, उपासिकाएँ आदि वेदिका स्तंभों में प्रमुख है। इन वस्तु खण्डों में जातक चित्रों का अच्छा चित्रण किया गया है।"[xvi] संघोल की कला भारतीय कला के इतिहास में अखण्ड स्थान प्राप्त किया है।

संघोल मूर्तिकला समाज की लोकप्रिय मान्यताओं और विचारों की द्योतक है। मौजूद अमूर्त प्रतीकवाद की ओर प्रवृत्ति की व्याख्या करती है। इस तरह की व्यापक मान्यताएँ एक ऐसी प्रतिमा का पता चलता है। यक्षिणी माँ देवी और प्रजनन की दिव्य छवियों वाली मूर्तियाँ संघोल से प्राप्त हुई है। संघोल महास्तूप की वेदिका कला संशोभित स्वर्गीय महिलाओं आकृति से भरी हुई है। जिन्हें मुख्य रूप से शालभंजिका और यक्ष या वेकुंठ के रूप में गिना जाता है। यहाँ से भगवान बुद्ध और बैठे हुए बुद्ध के टूटे हुए सिर खण्डित अवसरा में प्राप्त हुए है।

निष्कर्ष :-

पंजाब आधुनिक भारत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। पंजाब में अनेकों बौद्ध शासकों ने शासन किया। पंजाब में बौद्ध धर्म का इतिहास 2000 साल पुराना है। बौद्ध मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध ने अपने जीवन काल में पंजाब की धरती का भ्रमण

किया था और कुरु महाजनपद के कम्मासदम्म ओर 'घुल्लकोद्वित' नगरों में चारिका करते हुए भगवान बुद्ध ने सतिपट्टान सुत का उपदेश दिया था। जिससे यहाँ के लोग बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए। इस मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध द्वारा स्वयं बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार पंजाब की धरती पर हुआ। 1985 ई. संघोल बौद्ध स्थल की खोज ने पंजाब में बौद्ध धर्म के पुरातात्विक एवं स्थापत्य कला का एक मजबूत साक्ष्य प्रस्तुत किया। जो प्राचीन पंजाब में बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र था। उत्खनन में दो धर्म चक्र बौद्ध स्तूप और 117 कुषाण कालीन मूर्ति कला तथा 15000 से अधिक पुरातात्विक अवशेषों की महत्वपूर्ण खोज है। उतरापंथ के प्रमुख शहरों में धर्म चक्रनुमा बौद्ध स्तूप संघोल तक्षशिला का धर्मराजिका स्तूप, मथुरा का कनकालीक टीले से प्राप्त स्तूप व अमरावती से प्राप्त स्तूप धर्म चक्र पहिये के आकार के है। जो भारती वस्तुकला की विशिष्ट पहचान निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि संघोल वस्तुकला व स्थापत्य कला पंजाब की महत्वपूर्ण देन है। जो पंजाब के विभिन्न शहरों में बौद्ध धर्म की पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

---

[i] सिंह, डॉ. प्रियासेन भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 2000, पृ. बापट पी.वी. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग 2010, पृ. 6, पिपलायन मधुकर पंजाब में बौद्ध धर्म, 2013, पृ. 28

[ii] विपलायन मधुकर पंजाब में बौद्ध धर्म 2013, पृ. 28

[iii] फाउसबाल, बी.एन., दाँ जातक, 1963 लंदन

[iv] यादव के.सी., हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, 1992, पृ. 184

[v] दिव्यावदान, 29/9-10 "ताभिर्भगवतः केश, नख स्तूप प्रतिष्टिपिः।" बापट पी. बी., बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग 2010

[vi] दैनिक जागरण, नई दिल्ली 27 सितम्बर 2024, पृ. 6

[vii] अमर उजाला पंजाब, नवनीत छिब्बर, httpss//www.amarujala.com गोहाली 30 मार्च 2021,

[viii] वाजपेयी कृष्णदत्त भारतीय वस्तुकला का इतिहास उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, 2015, पृ. 55

[ix] अग्रवाल बी.एस. पाणिनी को ज्ञात भारत, 1953, पृ. 53, 56, 450, 451 महाभारत, 30, 31, 32, 33, https://boret disconvery.org.

[x] राय प्रभा हिमाशू, संघोल आरक्योलॉजी ऑफ पंजाब, 2010, पृ. 144, बील, सामुएल (n.d), सी-यू की बुद्विष्ट रिकॉर्ड ऑफ द वेस्टन बलड, ॥ वी लंदन विभाग पालु ट्रीच ट्रीन्य ट्रेबनर ऐनड कॉ लिमिटेड बुक IV ऑफ हुल्ग-सत्यांग, पृ. 178

[xi] शर्मा, जी.बी. कोईन सील एण्ड सेलिंग फोरम संघोल, 1986, पृ. 1

[xii] गुप्ता एस.पी. कुषाण स्कग्पयर करोम संघोल Ist and 2nd Centruy A.D. National Museum 2003, पृ. 20, अर्चना रानी संघोल और मथुरा की कला स्वाती पब्लिकेशन, 2007, पृ.

[xiii] शर्मा, जी.बी. कोईल सील एण्ड सेलिंग कोरम संघोल, 1986, पृ. 1

[xiv] गुप्ता एस.पी. कुषाण स्कलपयर करोम संघोल Ist and 2nd Century A.D. National Museum 2003, पृ. 18

[xv] गुप्ता एस.पी. कुषाण स्कलपयर करोम संघोल Ist and 2nd Century A.D. National Museum 2003, पृ 17

[xvi] शर्मा, जी.बी. कोईल सील एण्ड सेलिंग फोरग सघोल, 1986, पृ. 1